The Gnostic Gospels:

Are they the real history of Jesus?

रहस्यवादी सुसमाचार

क्या वे यीशु का वास्तविक इतिहास हैं?

क्या यीशु के विषय में गुप्त लेखनियाँ मौजूद हैं?

1945 में उच्च मिस्र में नाग हम्माडी के कस्बे के निकट एक खोज की गयी। प्राचीन लेखों की बावन प्रतियाँ, जिन्हें रहस्यवादी सुसमाचार कहते हैं चमड़े से लिपटे हुए एक आवरण में मिस्र में प्राचीनकालीन सरकण्डे के पौधे से बनाये हुए कागज़ों पर 13 लेखों (हस्तलिखित पुस्तकों) के रूप में पायी गयीं। ये प्रतिलिपियों के रूप में लिखी गयी थीं और एक आश्रम में स्थित एक पुस्तकालय की सम्पत्ति थीं।

रहस्यवादी लेखों के कुछ विद्वान अपनी इस बात को दृढ़तापूर्वक कहने के लिये बहुत दूर तक जा पहुँचे हैं कि नये नियम के बजाय हाल ही में खोजी गयीं ये लेखनियाँ यीशु का विश्वसनीय इतिहास हैं परन्तु क्या इन दस्तावेजों के प्रति उनका विश्वास ऐतिहासिक प्रमाणों से मेल खाता है? यह देखने के लिये कि क्या कल्पना से हम सत्य को पृथक कर सकते हैं, आइये हम एक गहन दृष्टि डालें।

गुप्त ''जानकार''

रहस्यवादी सुसमाचार एक समूह की विशेषता बताते हैं जिन्हें रहस्यवादियों के नाम से जाना जाता है (यहाँ बड़े आश्चर्य की बात है।) उनके नाम यूनानी शब्द नॉसिस से उद्धरत हैं जिसका अर्थ है ''ज्ञान''। ये लोग सोचते थे कि उनमें सामान्य लोगों की तुलना में एक छिपा हुआ गुप्त, विशिष्ट ज्ञान है।

जैसे–जैसे मसीहियत फैलती गयी, रहस्यवादियों ने अपने मतों में मसीहियत के कुछ सिद्धान्तों और तत्वों को मिला दिया, रहस्यवाद का सार एक बनावटी मसीहियत में बदल गया। संभवतः उन्होंने ऐसा नयी भर्तियों की संख्या बढ़ाने के लिये और यीशु को अपने हित के लिये इश्तहारों में दर्शाया जाने वाला शिशु बनाने के लिये किया। हालांकि, उनकी वैचारिक व्यवस्था को मसीहियत के खाँचे में उचित रूप से बैठाने के लिये, यीशु को अपने विशुद्ध ईश्वरत्व और मानव स्वभाव को हटाकर पुर्नउद्भव होने की आवश्यकता पड़ी।

द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ क्रिश्चियनिटी में जॉन मैकमैनर्स ने रहस्यवादी जनों के मसीही और काल्पनिक विश्वासों के मिश्रण के विषय में लिखा है :

''रहस्यवाद बहुत सारे तत्वों को दार्शनिक और धार्मिक मतों में मिलाकर बनाया गया परमशक्ति के प्रगटीकरण का मिश्रण था (अभी भी है)। तन्त्र–मन्त्र और पूर्वी देशों का इन्द्रजाल ज्योतिष विद्या, जादूगरी के साथ मिलकर आडम्बर बन गया .... उन्होंने यीशु की उन शिक्षाओं को चुना जो उनके स्वयं के अनुवाद के आकार के ढाँचें में उचित बैठती थीं (जैसा कि थोमा के सुसमाचार में है) और अपने सर्मथकों को मसीहियत वैकल्पिक और विरोधी स्वरूप सौंप दिया।''[1]

आरम्भिक आलोचक

प्रथम शताब्दी में यीशु की मृत्यु के ठीक कुछ दशकों उपरान्त दार्शनिकता की एक कोमल पौध स्वयं पनप रही थी। प्रेरित, उस यीशु की सत्यता का विरोध किये जाने के कारण जिसके वे स्वयं चश्मदीद गवाह थे, अपनी शिक्षाओं और लेखनियों में उन मतों का खण्डन करने में लम्बी ऊँचाईयों को छू चुके थे।

उदाहरण के लिये, जाँचें, प्रेरित यूहन्ना ने प्रथम शताब्दी के लगभग अन्त में क्या लिखा :

झूठा कौन है? केवल वह जो यीशु के मसीह होने से इन्कार करता है; और मसीह का विरोधी वहीं है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है। (1 यूहन्ना 2 : 22, एन आई वी)।

प्रेरितों की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए, आरम्भिक कलीसियाई अगुवों ने एकमत होकर रहस्यवादियों की निन्दा मसीह विरोधी सम्प्रदाय के रूप में की। निकाया की महासभा के 140 वर्ष पूर्व लिखी गयी कलीसियाई पिता इरेनेअस की लेखनी पुष्टि करती है कि रहस्यवादियों की निन्दा पाखण्डियों के रूप में कलीसिया द्वारा की गयी। उसने स्वयं भी उनके ''सुसमाचारों'' को नकार दिया। हालांकि नये नियम के चार सुसमाचारों का संदर्भ देते हुए, उन्होंने कहा, ''यह सम्भव नहीं है कि सुसमाचार संख्या में उससे अधिक या कम हो सकें जितने कि वे हैं।''[2]

निकाया से सौ वर्ष से भी अधिक पूर्व तीसरी शताब्दी के आरम्भ में मसीही धर्मशास्त्री ओरिजन ने लिखा :

मैं एक ऐसे विशेष सुसमाचार को जानता हूँ जिसे ''थोमा के अनुसार सुसमाचार'' और ''मत्तीआस के अनुसार सुसमाचार'' कहा जाता है और बहुतेरे अन्य हम पढ़ चुके हैं – कहीं ऐसा न हो कि किसी रीति से हम अज्ञानी माने जायें, उन लोगों के कारण जिन्होंने कल्पना की, यदि

वे इनसे परिचित हैं तो कुछ ज्ञान अवश्य रखते होंगें। तब पर भी, इन सबके मध्य हमने एकमत होकर उसे स्वीकार किया है जिसे कलीसिया ने प्रमाणित किया है, वह यह है कि केवल चार सुसमाचार हैं जिन्हें स्वीकार करना चाहिए।[3]

यीशु मसीह के जीवन में सम्बन्धित घटनाओं के लेखक

जब रहस्यवादी सुसमाचारों की बात आती है तो लगभग प्रत्येक पुस्तक नये नियम के चरित्रों के नाम धारण किये हुए है : फिलिप्पुस का सुसमाचार, पतरस का सुसमाचार, मरियम का सुसमाचार और क्रमशः। परन्तु क्या वे कभी अपने विषय में झूठे दावे करने वाले लेखकों द्वारा लिखे गये थे? आइये एक दृष्टि डालें।

रहस्यवादी सुसमाचारों का समयकाल लगभग मसीह से 110 से 300 वर्ष पश्चात् है और कोई भी विश्वसनीय विद्वान इस बात पर विश्वास नहीं करता कि उनमें से कोई भी अपने नामाराशियों द्वारा लिखे जा सकते हैं। जेम्स एम0 रॉबिन्सन के विस्तृत ज्ञान से भरपूर पुस्तकालय नाग हैम्माडी में हमें ज्ञात होता है कि रहस्यवादी सुसमाचार ''ढेर सारे गैर सम्बन्धी और गुमनाम लेखकों द्वारा लिखे गये थे।''[4]

नये नियम के विद्वान नॉरमन जैसलर लिखते हैं, ''रहस्यवादी सुसमाचार प्रेरितों द्वारा नहीं लिखे गये थे, परन्तु दूसरी शताब्दी (और बाद) के मनुष्यों ने अपनी शिक्षाओं में सुधार करने के लिये प्रेरिताई अधिकारों के उपयोग का प्रदर्शन मात्र करते हुए लिखे थे। वर्तमान समय में हम इसे जालसाज़ी और धोखाधड़ी कहते हैं।''[5]

यीशु मसीह के जीवन से सम्बन्धित घटनाएँ बनाम इतिहास

रहस्यवादी सुसमाचार यीशु के जीवन का ऐतिहासिक वर्णन तो नहीं हैं परन्तु इसके स्थान पर ये व्यापक रूप से रहस्यों का आवरण ओढ़े हुए, ऐतिहासिक विवरणों जैसे नाम, स्थान और घटनाओं को छोड़े हुए गोपनीय कथन हैं। ये नये नियम के उन सुसमाचारों पर विरोधात्मक प्रहार हैं, जो यीशु के जीवन, प्रचार कार्य और वचनों के असंख्य ऐतिहासिक तथ्यों से परिपूर्ण हैं।

किसकी बात पर आप अधिक सरलता से विश्वास करना चाहेंगें ऐसा व्यक्ति जो कहता है, ''अरे! मुझे कुछ ऐसे गुप्त तथ्य प्राप्त हुए हैं जो मुझ पर रहस्यात्मक रीति से प्रगट किये गए थे,'' या ऐसा व्यक्ति जो कहता है, ''मैंने सभी प्रमाणों और इतिहास की खोज–बीन कर डाली है और यह सब कुछ यहाँ तुम्हारे लिए है ताकि तुम अपने दिमाग की खिड़कियाँ खोल सको''? इस प्रश्न को दिमाग में रखते हुए, इन निम्नलिखित दो कथनों पर विचार करें, जिसमें से पहला

थोमा के रहस्यवादी सुसमाचार (110–150 ई0) से है और दूसरा नये नियम में लूका रचित सुसमाचार (55–70 ई0) से है।

- ❖ ये वे गुप्त वचन हैं जो यीशु ने बोले और यहूदा और थोमा दोनों ने लिपिबद्ध किये।[6]
- ❖ इसलिये कि बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीतीं हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्होंने जो पहिले हीं से इन बातों के देखने वाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुँचाया। इसलिये हे श्रीमान् थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक–ठीक जांच करके उन्हें तेरे लिये क्रमानुसार लिखूं। कि तू यह जान ले कि वे बातें जिनकी तूने शिक्षा पाई है कैसीं अटल हैं। (लूका 1:1–4, एन एल टी)

क्या आप पाते हैं कि लूका की उपरोक्त और उन्मुख पहुँच आकर्षक है? और क्या आप इस तथ्य को पाते हैं कि यह मूल घटनाओं के समक्ष इसकी विश्वसनीयता को अपने पक्ष में हासिल करने के कारण लिखा गया? यदि ऐसा है, तो यहीं वह बात थी जिसके विषय में आरंभिक कलीसिया ने भी विचार किया था।

और अधिकांश विद्वान आरंभिक कलीसिया के इस दृष्टिकोण पर एकमत हैं कि नया नियम यीशु का विश्वसनीय इतिहास है। नये नियम के शोध शास्त्री रेमण्ड ब्राउन ने रहस्यवादी सुसमाचारों के विषय में कहा है, ‘‘हम ऐतिहासिक तौर पर यीशु के सेवाकार्य के विषय में एक भी प्रमाणिक तथ्य की जानकारी नहीं पाते हैं, परन्तु कुछ और नयी कही गयी बातें जो संभवतः उसके विषय में हो सकती होंगी।’’[7]

अतः यद्यपि रहस्यवादी सुसमाचारों ने कुछ विद्वानों को प्रभावित तो किया है, परन्तु इनके विलम्बित समयकाल और पुस्तक लेखन कार्य के सन्देहयुक्त प्रश्नों की तुलना नये नियम से नहीं की जा सकती। नये नियम और रहस्यवादी सुसमाचारों के मध्य इस प्रकार का विरोधाभास उनका खण्डन करता है जो साज़िश भरे सिद्धान्तों को बढ़ावा दे रहे हैं। नये नियम के इतिहासकार एफ0 एफ0 ब्रूस ने लिखा है, ‘‘संसार में प्राचीन साहित्य का जानकार कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसने सत्यता की पुष्टि करने वाले इतने उत्तम खज़ाने वाले मूल लेखन अर्थात् नये नियम का आनन्द उठाया हो।’’[8]

अनुसूची

1. जॉन मैकमेनर्स, इडी0, द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ क्रिश्चियनिटी (न्यूयॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002), 28
2. डैरेल एल0 बॉक, ब्रेकिंग द डा विन्सी कोड (नैशविल : नैल्सन्, 2004), 114
3. बॉक, 119–120
4. आईबिड, 13
5. नॉरमन जैस्लर और रॉन ब्रूक्स, व्हेन स्केप्टिक्स् आस्क (ग्रैंड रैपिडस्, एम आई : बेकर, 1998), 156
6. रॉबिन्सन में वर्णित, 126
7. लट्ज़र में वर्णित, 32
8. जॉश मैक्डॉवेल, द न्यू एविडेन्स दैट डिमाण्डस् ए वर्डिक्ट (सैन बरनारडिनो, सी ए : हिअर्स लाइफ, 1999, 37) में वर्णित।